अध्याय 1

वर्ण विचार

ध्वनि, वर्ण, वर्तनी

ध्वनि

'ध्वनि' बोलनिहार के मुँह से उच्चरित होके सुननिहार के कान के सुनाई पड़ेवाला नाद के कहल जाला। अर्थबोध करावेवाली ध्वनि सार्थक आ बिना अर्थबोध वाली ध्वनि निरर्थक कहल जाले। व्याकरण में 'सार्थक ध्वनि' पर विचार करत ओकरा 'भाषा-ध्वनि' चाहे 'वाग्-ध्वनि' कहल गईल बा। एह तरह से 'ध्वनि' चाहे 'भाषा-ध्वनि' भाषा में प्रयुक्त ऊ लघुत्तन ध्वनि होले, जवन वक्ता के मुँह से उच्चरित होके आ अउर ध्वनियन के साथ मिल के अर्थबोध करावे में समर्थ होय। अ, आ, ई, ई, क, ख्, ग् वगैरह वक्ता के मुँह से उच्चरित होके ध्वनि कहल जाले। ध्वनियन का एह लिखित रूप के 'लिपि-संकेत', 'ध्वनि-चिह्न' चाहे 'वर्ण' कहल जाला।

ध्वनि-भेद

भाषा में दू तरह के ध्वनि प्रयुक्त होले-स्वर ध्वनि आ व्यंजन ध्वनि। जवना ध्वनि के उच्चारण अपने आप होय, मतलब, जवना के उच्चारण खातिर अउर ध्वनियन के मदद ना लेवे के पड़े, स्वर ध्वनि कहल जाले, जइसे-अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए वगैरह। जवना ध्वनि के उच्चारण स्वर ध्वनि के सहायता से होय, ओकरा के व्यंजन-ध्वनि कहल जाला,

जइसे-क्, ख्, ग्, च्, छ्, ज् वगैरह। एह व्यंजन ध्वनियन के उच्चारण खातिर स्वर ध्वनि के मदद लिहल जरूरी बा, जइसे स्वर ध्वनि 'अ' के सहायता से व्यंजन ध्वनि क्+अ = क, ख्+अ = ख, ग्+अ = ग, वगैरह के उच्चारण होला। एह स्वर आ व्यंजन ध्वनियन खातिर निर्धारित 'ध्वनि-चिह्न' के स्वर वर्ण आ व्यंजन वर्ण कहल जाला।

वर्ण

वर्ण ओह मूल ध्वनि का लिपि-संकेत के कहल जाला जवना के खंड चाहे टुकड़ा ना होय, जइसे-अ, आ, इ, क्, ख्, ग् वगैरह। भोजपुरी के एगो शब्द बा - 'अदहन'। एह शब्द में अ, द्, अ, ह्, अ्, न्, अ सात गो वर्ण बा, जवना में 'अ' के बोले खातिर कवनों दोसर वर्ण के मदद के जरूरत नइखे पड़त। एकर उच्चारण अपने-आप हो जाता, आहि जा द्,ह्,न् के उच्चारण खातिर वर्ण 'अ' के सहायता लेवे के पड़ता। एह उच्चारण के आधार पर वर्ण के दू भेद कइल गईल बा-स्वर वर्ण अउर व्यंजन वर्ण जवना वर्ण के उच्चारण अपने आप होय, ओकरा के स्वर वर्ण आ जवना वर्ण के उच्चारण स्वरवर्ण के सहायता से होय, ओके व्यंजन वर्ण कहल जाला।

स्वर वर्ण

भोजपुरी में मूल स्वर वर्ण के संख्या तीन बा-अ, इ, उ। एह तीनों मूल स्वरन के ह्रस्व स्वर भी कहल जाला आ एही तीनों स्वरन का मेल से आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, दीर्घ आ संयुक्त स्वर वर्ण बनेलें। समान ह्रस्व स्वर के मेल से दीर्घ स्वर बनेला जइसे - आ (अ+अ), ई(इ+इ),

अब भोजपुरी के बोली से भाषा के रूप में हो गइला का बाद आ बिहार आ उत्तर प्रदेश के कई विद्यालय आ विश्वविद्यालवन में एकरा अध्यापन के काम हो रहल बा।

कवनो भाषा के व्याकरण ओकरा भाषा के सर्त प्रयोग करावे के गुर सिखावे ला। एह बात के ध्यान में राख के व्याकरण के जरूरत महसूस भइल। कुछ व्याकरणो लिखाइल बा, बाकिर राज्य शिक्षा शोध संस्थान परिषद् द्वारा भोजपुरी भाषा आ साहित्य के पाठ्यक्रम तइयार हो चुकल। एह में व्याकरण के कुछ जरूरी अंश लिहल गइल बा।

भोजपुरी भाषा आ साहित्य के पाठ्यक्रम में शामिल करावे में **डॉ. सुरेन्द्र कुमार पाल**, व्याख्याता, एस.सी.ई.आर.टी. बिहार के बहुत बड़ योगदान रहल। साँच कहीं त उनही के कठिन मेहनत आ लगन के कारण ई पाठ्यक्रम में शामिल हो के पुस्तक के रूप में अपने सभन के सामने आइल। एह खातिर **डॉ. पाल** के जेतना प्रशंसा कइल जाव, कम बा।

हमरा आशा बा, भोजपुरिहा क्षेत्र के लोग एह के तहेदिल से अपनाई आ अगर कवनो तरह के कमी रह गइल होखे, त अगिला संस्करण में पूरा हो जाई।

अंत में पाठ्य पुस्तक विकास समिति के निर्माण में लागल भोजपुरी के सभी विद्वान लोगन के प्रति आभार प्रगट करत बानी।

(हसन वारिस)
निदेशक (प्रभारी)
राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद् बिहार
पटना-800006

कथनी

अर्द्धमागधी से निकलल पूर्वी भारत में फइलल- खास कर बिहार में, कई गो बोलियन के समूह रहल बा आ एही बोलियन के समूह के तरह लगभग बीस बोलियन के समूह ह हिन्दी। एही बोलियन में भोजपुरी, मगही, मैथिली, अंगिका, बज्जिका आदि बा। कुछ समय पहिले तक ई सब बोली के रूप में मानल जात रहे, बाकिर धीरे-धीरे ई सब बोली से भाषा के रूप ले लिहलस। एह दौड़ में मैथिली कुछ आगे निकल गइल। ओकरा बाद भोजपुरी आ दोसर बोलियन के बारी आइल। एह में भोजपुरी बोली तनी आगे हो गइल- एकरा साथे आउरियो चले लागल। बोली से ई सब भाषा के रूप धइलस। एकर आपन लिखित साहित्य भइल अपन साहित्य विधा के हर भाग में लिखाइल। उपन्यास लिखाइल, नाटक आ कहानी लिखाइल, कहे के गरज ई कि एह में सब कुछ लिखाइल। लिखले ना गइल पढ़ाइयो शुरू भइल।

भाषा जब साहित्य से जुड़ जाला, पढ़े-पढ़ावे के माध्यम के रूप में उभर के सामने आवेला त ओह में एकरूपता ले आवे खातिर ओह भाषा-विशेष के व्याकरण के जरूरत पड़ेला, काहे कि व्याकरण भाषा के ऊ चाबुक ह जवन सब जगह से हाँक-हूँक के सही राह पर ले आवे के काम करेला।

अभी भोजपुरी भाषा के संक्रमण काल बा, हालांकि एह भाषा में सब कुछ लिखा चुकल बा, लिखा रहल बा, पढ़ल-पढ़ावल जा रहल बा, व्याकरण के जरूरत पड़ गइल, हालाँकि सगरी जगह के भोजपुरी के एक

ऊ (उ+उ)। असमान ह्रस्व स्वर के मेल से संयुक्त स्वर चाहे संधि-स्वर बनेला जईसे-ए (अ+इ), ऐ (अ+ए), ओ (अ+उ), औ (अ+ओ)। भोजपुरी में प्रयुक्त एह दसो स्वर वर्ण के कई-कई गो उच्चारण रूप बा।

एह दसो स्वर वर्ण के तीन भाग में बाँटल गइल बा-

ह्रस्व स्वर वर्ण	-	अ, इ, उ
दीर्घ स्वर वर्ण	-	आ, ई, ऊ
संयुक्त स्वर वर्ण (संधि स्वर)	-	ए, ऐ, ओ, औ
गुण स्वर	-	ए, औ
वृद्धि स्वर	-	ऐ, औ

स्वर वर्ण के अन्य भेद

निरनुनासिकता आ अनुनासिकता के आधार पर स्वर वर्ण के दूगो भेद होला-(क) साधारण (सामान्य) चाहे निरनुनासिक स्वर वर्ण आ (ख) अनुनासिक चाहे सानुनासिक स्वर वर्ण।

जवना स्वर के उच्चारण में मुँह से पूरा-पूरा साँस निकले आ नाक के मदद ना लेवे के पड़े, ओकरा के साधारण चाहे निरनुनासिक स्वर कहल जाला जइसे- अ, आ, ई, ई, उ, ऊ वगैरह।

जवना स्वर के उच्चारण मुँह के साथ-साथ नाको से कुछ हवा (साँस) निकले, ओकरा के अनुनासिक चाहे सानुनासिक स्वर कहल जाला

जइसे- अं, अं। अनुनासिक स्वर के लिखित रूप में स्वर के ऊपर अनुस्वार (-) के चिह्न दिहल जाला आ अनुनासिके स्वर में जब हवा (साँस) नाक से आउरो कम अंश (अनुस्वार के उच्चारण वाला अंशो से कम) में बाहर निकले तब ओकरा खातिर स्वर वर्ण के ऊपर चन्द्रविन्दु (ँ) के चिह्न लगावल जाला। उदाहरण खातिर अनुस्वार वाला स्वर वर्ण-अं (अंगूर, अंतरा) आ चन्द्रविन्दु वाला स्वर वर्ण-अँ (अँतरी, आँठी, अँठइल, अँटिआ)।

एह तरह से भोजपुरी में स्वर वर्ण के कुल संख्या बारह होता-अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, अँ। अइसे भोजपुरी में ऐकार अउर औकार वाला शब्दन के अभाव बा बाकिर संस्कृत अउर हिन्दी के प्रभाव से आधुनिक भोजपुरी में से अउर और वाला शब्दन के प्रयोग हो रहल बा। एकरा अलावे भोजपुरी में 'ऋ' स्वर के अस्तित्व नइखे, बाकिर संस्कृत अउर हिन्दी से आइल शब्दन खातिर 'ऋ' स्वर लिखाय-पढ़ाय लागल बा। अइसे भोजपुरी भाषी एह 'ऋ' स्वर के उच्चारण 'रि' जइसन करेलन।

जाति के आधार पर स्वर वर्ण के दू भाग में बाँटल गइल बा- सजातीय चाहे सवर्ण स्वर आ विजातीय चाहे असवर्ण स्वर।

समान स्थान आ प्रयत्न से उच्चरित स्वर सजातीय चाहे सवर्ण स्वर कहल जाला, जइसे-इ, ई।

अलग-अलग स्थान आ प्रयत्न से उच्चरित स्वर के विजातीय चाहे असवर्ण स्वर कहल जाला जइसे-अ, ऊ।

व्यंजन वर्ण

भोजपुरी में उच्चरित होखेवाला मूल व्यंजन वर्ण के संख्या ***32 (बतीस)*** गो बा- क्, ख्, ग् घ्, ङ्, च्, छ्, ज्, झ्, ञ्, ट, ठ्, ड्, ढ्, ढ़्, द्, ढ़्, म्, क्, द्, ध्, प्, फ्, ब्, भ्, म्, य्, र्, ल्, व्, स्, ह्।

भोजपुरी के अपना मूल शब्दन में ण्, श्, ष् व्यंजन अउर क्ष्, त्र, ज्ञ् संयुक्त व्यंजन वर्ण के अस्तित्व नइखे, बाकी संस्कृत अउर हिन्दी के प्रभाव से आधुनिक भोजपुरी में एह व्यंजन वर्ण के प्रयोग हो रहल बा। एकरा अलावे भोजपुरी में प्रयुक्त होखेवाला कुछ खास संयुक्त व्यंजन बाड़े स। जइसे-ङ् ह (खङ्ह, गेङ्हवा), न्ह (रीन्हल, अँउन्हल, मुन्हारे, चोन्हाइल), म्ह (थम्हल, थाम्हल, जम्हुआइल), ल्ह (अल्हर, आल्हा, कुल्ह, काल्ह), र्ह/ई (गर्ह्ल/गईल, मर्ह्/मर्हि, लेंर्ह्ा, मार्ह्ा, कोर्ह्ी)।

व्यंजन वर्ण के भेद

व्यंजन वर्ण के उच्चारण में भीतर से आवेवाली हवा (साँस) कंठ से ओठ तक कहीं ना कहीं हलुके रोकावट के जवरे बाहर निकलेले, जवना के आधार पर व्यंजन वर्ण के तीन गो भेद कइल गइल बा- स्पर्श (वर्गीय), अन्तःस्थ अउर उष्म।

व्यंजन वर्ण के अउर भेद

उच्चारण में वायु प्रक्षेप के दिसाई-व्यंजन के दूगो भेद होला- अल्पप्राण आ महाप्राण।

अल्पप्राण- अल्प मतलब थोड़ा आ प्राण मतलब साँस (हवा के शक्ति)। जवना व्यंजन के उच्चारण में बहुते कम वायु के प्रयोग होय चाहे जवना व्यंजन के उच्चारण में 'ह' के मेल ना हो, ऊ अल्प प्राण व्यंजन कहल जाला, जइसे- क्, ग्, ङ्, च्, ज्, ञ्, ट्, ड्, त्, द्, न्, प्, ब्, म्, य्, र्, ल्, व्। हर वर्गीय व्यंजन के पहिला, तिसरका, पाँचवा व्यंजन आ य्, र्, ल्, व्।

महाप्राण- जवना व्यंजन के उच्चारण में साँस बल अल्प प्राण से कुछ अधिक लागे आ ओकर उच्चारण 'ह्' सहित होय, ऊ महाप्राण व्यंजन कहल जाला, जइसे- ख्, ध्, छ्, झ्, ण्, ढ्, थ्, ध्, फ, भ्, स्, ह्, ङ्, ह्, न्ह्, म्ह्, र्ह, ल्ह्।

नाद के दिसाईं वर्ण के दूगो भेद होला-घोष आ अघोष।

घोषवर्ण- जवना वर्ण के उच्चारण में स्वरतंत्री सब आपुस में झंकृत होय, ऊ घोष वर्ण कहल जाले, जइसे-सब स्वरवर्ण वर्गीय व्यंजन के तीसरा, चउथा, पाँचवाँ व्यंजन, चारो अन्तःस्थ आ ह् (ऊष्म व्यंजन)-अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, ग्, घ्, ङ्, ज्, झ्, ञ्, ड्, ढ्, द्, ध्, न्, ब्, भ, म्, य्, र्, ल्, व्, ह्।

अघोषवर्ण- जवना वर्ण के उच्चारण में स्वरतंत्री सब घोष वर्ण के उच्चारण जइसन झंकृत ना होय, ऊ अघोष वर्ण कहाला जइसे-क्, ख्, च्, छ्, ट्, ठ्, त्, थ्, प्, फ्, श्, ष्, ह।

अक्षर

मुखरता के आधार पर अक्षर 'अ+क्षर' चाहे 'अक्ष+र' के रूप में बोलल जा सकेला। अ+क्षर वाला रूप में 'अ' ना के अर्थ में आ 'क्षर' क्षरण के अर्थ में बा, अर्थात् जवना के क्षरण ना होय, ऊ अक्षरं न क्षरं विद्यात्। क्षयिते न क्षरतीति वाक्षरम्। 'अक्षर' शब्द 'क्षर' आ 'क्षरि' दूनों धातुअन से निष्पन्न मानल गइल बा। एह दूनों से उहे अर्थ निकलेला, जवना के क्षरण ना होय।

कालक्रम से अक्षर के अर्थ बदलत रहल बा। 'अक्षर' 'वाक्'के अर्थ में भी प्रचलित रहल बा। साँच पूंछी त अक्षर शब्द के विधायक तत्व ह। क, ख, ग, घ वगैरह अक्षर ह। क्, ख्, ग्, घ् वगैरह ध्वनि वर्ण ह। एह तरह से व्यंजनन में स्वर के संयोग से अक्षर बनल बा। देवनागरी लिपि आक्षरिक बा।

भोजपुरी के ध्वनि चाहे वर्ण के उच्चारण संबंधी विशेषता

स्वर वर्ण के उच्चारण संबंधी विशेषता

'अ'

भोजपुरी में 'अ' के उच्चारण में मुँह तनी गोल 'क' के होला। भोजपुरी अ के उच्चारण के लमहर विशेषता ई बा कि एकरा ह्रस्व मात्रा के भी विलम्बित उच्चारण होला, जवना से 'ऊ' दीर्घ नियन लागेला, जइसे- अच्छा-आच्छा, बच्चा-बाच्चा, कतना-कातना, फरका-फाराका वगैरह। एकरा में अंतिम 'आ' ध्वनि त पूरा उच्चरण वाला बा बाकी

पहिलेवाला अ ध्वनि विलम्बित उच्चारण के कारण आ के ओर झुकल सुनाता। एह अ के दीर्घ अ चाहे ह्रस्व आ के रूप में समझल जा सकेला। बाकिर अइसन उच्चारण के हू-बहू लिखे खातिर लिपि में ह्रस्व अ के एगो चिह्न बनावे के पड़ी, चाहे अर्ध 'अ' के चिह्न (विकारी-ऽ) के प्रयोग करे के पड़ी, - अऽच्छा, बऽच्चा, कऽतऽना वगैरह। एह तरह के लिपि से सामान्य लेखन में काफी कठिनाई होई एह से भाषा में अच्छा, बच्चा, कतना, फरकाशब्द रूप चले देवे के चाहीं।

'आ'

भोजपुरी में 'आ' के दूगो उच्चारण भंगिमा बा-दीर्घ आ-अउर ह्रस्व 'ऑ'। दीर्घ आ के उच्चारण में जीभ के बीच के भाग बहुत कम ऊपर उठेला। असल में ई केन्द्रीय स्वर ह। एकरा उच्चारण में ओठ गोल (वर्तुलाकार) ना होखे। जइसे-आन्हर, आरा, आम, आज के 'आ'। ह्रस्व 'आ' के उच्चारण स्थान दीर्घ आ के अपेक्षा कुछ ऊपर होला। अंगरेजी के कॉलेज, बॉल आ भोजपुरी के मॉरले, पॉरले जइसन शब्दन में मिलेला। भोजपुरी में ह्रस्व 'ऑ' के उच्चारण भइला के बावजूद लिखे में सामान्य दीर्घ 'आ' चाहे ओकरा मात्रा के व्यवहार कइल उचित होई।

'इ'

ह्रस्व 'इ' के उच्चारण स्थान भोजपुरी दीर्घ ई से कुछ नीचे होला जइसे-फिकिर, मरिचा, लइका, इसराज के इ पूर्ण ध्वनि ह। भोजपुरी में अति ह्रस्व ई के एगो स्थिति बा, जवन विशिष्ट अपूर्ण ध्वनि ह जे प्रायः अनुच्चरित जइसन रहेले, जइसे-जोइ, पोई, टोकि्, ओकि् वगैरह।

'ई'

'ई' संवृत दीर्घ अग्रस्वर ह। एकरा उच्चारण में जीभ के अगिला भाग एतना ऊपर उठ जाला कि कठोर के बहुत निकट पहुँच जाला। भोजपुरी 'ई' के उच्चारण स्थान मूल चाहे प्रधान स्वर ई के तुलना में कुछ नीचे होला, जइसे- ईजत, ईसर, ईश्वर, ईख वगैरह के ई।

भोजपुरी में प्रयुक्त दुअक्षरा तत्सम शब्दन में यदि पहिला अक्षर अकार आ दूसरका इकार के रहला पर दूसरका इकार के उच्चारण ईकार हो जाला आ ओकर वर्तनी प्रसंग आ प्रयोक्ता-भेद से तत्सम आ तद्भव दूनों रूप में चलेला-कवि-कबी, छवि-छबी, गति-गती, मति-मती। दू भा तीन अक्षरा शब्दन में पहिला अक्षर इकार आ अंतिम अक्षर अकार रहला पर पहिला इकार के उच्चारण दीर्घ 'ई' जइसन हो जाला, जइसे-दिन-दीन, टिन-टीन, तिल-तील, मिल-मील, चिलम-चीलम, पितर-पीतर वगैरह। बाकी अइसन उच्चारण चाहे वर्तनी से कबो-कबो शब्द के अर्थ बोध में बाधा उत्पन्न हो जाला। शब्द के वर्तनी भेद से अर्थभेद हो जाला-दिन-दीन, सिल-सील, पितर-पीतर वगैरह। अपवाद-क्रिया पद के उच्चारण में क्षिप्रता चाहे तीन अक्षर का शब्दन में बीचवाला अक्षर दीर्घ चाहे प उच्चारण के बलाघात पड़ला पर शब्द के पहिला अक्षर इकारे उच्चरित होला, जइसे-तिगर, निकल, दिनाय, पिसान, सिलेट, निकडल वगैरह।

'उ'

ह्रस्व 'उ' के उच्चारण स्थान दीर्घ ऊ से थोड़ा नीचे होला, एकरा उच्चारण में ओठ गोल त होला, बाकिर ओतना ना जेतना बंगला में होला,

जइसे-ससुर, भसुर, सासु वगैरह। भोजपुरी में अति ह्रस्व 'उ्' के भी स्थिति बा। जवना के उच्चारण में ओठ ह्रस्व 'उ' के अपेक्षा कम गोल होला। बाकी-ह्रस्व 'उ' शब्द के अंत में आ अति ह्रस्व 'उ्' शब्द के आदि में व्यवहृत ना होले, जइसे-उधार, उजार, ऊखि, रूखि, आजु वगैरह। भोजपुरी में अति ह्रस्व 'उ्' के व्यवहार वैकल्पिक रूप से ह्रस्व 'उ' आ दीर्घ 'ऊ' दूनों खातिर होला, जइसे - ऊ उठो, ऊ सूते वगैरह में उ्, सु एकर उदाहरण बा।

'ऊ'

ऊ संवृत दीर्घ पश्चस्वर ह। भोजपुरी के ऊरिद, दूध जइसन शब्द में एकर अस्तित्व पावल जाला।

'ऋ'

'ऋ' संस्कृत के आपन ध्वनि (वर्ण) ह । भोजपुरी में अपना शब्दन में एह ध्वनि के कवनो अस्तित्व नइखे। संस्कृत, हिन्दी के तत्सम-शब्दन के जब भोजपुरी में प्रयोग होला तब एकर व्यवहार कइल जाला बाकिर एकर उच्चारण 'रि' जइसन होला। भोजपुरी व्यंजन में 'ऋ' के मात्रा व्यंजन के नीचे चिह्न के रूप में लागेला चाहे व्यंजन में ह्रस्व इकार के मात्रा के बाद 'र' व्यंजन के प्रयोग होला-जइसे -कृपा-किरपा, सृजन-सिरजन, पृष्ठ-पिरिष्ठ कृष्ण-किरसन/किसुन वगैरह।

'ए'

ए अर्द्ध-विवृत दीर्घ अग्रस्वर ह। एकरा भोजपुरी उच्चारण में जीभ के उठल भाग मूल चाहे प्रधान 'ए' के अपेक्षा कुछ पीछे रहेला। भोजपुरी

में एकर दीर्घ, ह्रस्व आ अति ह्रस्व तीन उच्चारण भंगिमा बा। दीर्घ ए के उच्चारण-एड़ी, लेवा, खेवा, कलेवा, सगरे, अनेरे, देर, छेनी, केहू, एक वगैरह।

भोजपुरी में दीर्घ ए के उच्चारण के स्थिति-दू अक्षर वाला शब्द के आदि में, तीन अक्षर वाला शब्द के बीच में ए आवे अउर आगे-पीछे सब अक्षर ह्रस्व होखे त 'ए' के दीर्घ उच्चारण होला, जइसे-एक, केरा, केहू, एकर, तेतर, तेसर, देवर, नेवर, भदेस, सकेत, हुरपेटल वगैरह।

ह्रस्व 'ए' मूल स्वर 'ए' आ विवृत 'ए' के बीच में बा जइसे-एकहन, एकरार, ढेकुआरि वगैरह।

भोजपुरी के तीन अक्षर वाला शब्द के आदि ए रहे अउर दोसरका चाहे तिसरका अक्षर चाहे दूनों अक्षर दीर्घ होखे त 'ए' ह्रस्व उच्चरित होला, जइसे- केराव, घेराव, नेबार, सेवार, देवरा, केवाड़ी, खेसारी, बेमारी वगैरह। एकरा अलावे चार चाहे चार से अधिका अक्षर वाला शब्द में (हेहरपन, मेहतर आदि में) एकार वाला क्रियापद के बनल प्रेरणार्थक आ कृदन्त रूप में (देखल-देखाई, देखावल, पेरल-पेरावल, पेरवावल, पराई, घेरल-घेराई, घेराव, घेरावल, घेरवावल), पूर्वकालिक क्रिया (देखाऽके, सुनाऽके, समेटाऽके), संयुक्त क्रिया का पहिली क्रिया के आदि आ मध्य में (देखाऽदिहल, हुरपेटाऽईल), बे उपसर्ग वाला शब्द के 'बे' के उच्चारण आदि में ह्रस्व 'ए' होला- बेकऽहल, बेदम, बेबस, बेरहम वगैरह।

अपवाद- जोर देवे खातिर कबो-कबो 'बे' के अतिदीर्घ उच्चारण कईल जाला-बेऽकार, बेकहल, बेदिल वगैरह। अति ह्रस्व 'ए' सहायक ध्वनि ह। एकर अस्तित्व ढेबुआ, केचुआ जइसन शब्दन में पावल जाला। अति ह्रस्व 'ए' के उच्चारण में जीभ के नोख निचला मसूड़ा के छुअत प्रतीत होले। अतिह्रस्व 'ए' के उच्चारण शब्द के अंत में ना होखे।

'एँ'

डॉ॰ उदयनारायण तिवारी के अनुसार 'एँ' अत्यधिक विवृत स्वर ह आ एकर उच्चारण स्थान उहे ह, जवन मूल स्वर 'एँ' के ह। असल में एकर व्यवहार प्रत्यय के रूप में होला। प्राचीन भोजपुरी में जोर देवे खातिर, एकरा साथे हि अव्यय के व्यवहार होत रहे, बाकी आधुनिक भोजपुरी में एकर लोप हो गइल बा। प्रत्यय-रूप में शब्द के अंत में प्रयुक्त भइला पर ई अतिह्रस्व ए अउर ह्रस्व ए के रूप धारण कर लेवेला।

ए,ओ,औ

ए, ऐ, ओ, औ चारो संयुक्त स्वर (संधिस्वर) हवेस जवना में 'ए' अउर 'ओ' गुण स्वर बा आ 'ऐ' अउर 'औ' बृद्धिस्वर। भोजपुरी उच्चारण में 'ए' अउर 'ओ' गुण स्वर के ह्रस्व दीर्घ उच्चारण प्रसंग आ प्रयोक्ता भेद के अनुसार पावल जाला। मतलब एह दूनों गुण स्वर वर्ण के अस्तित्व बा बाकिर 'ए' अउर 'औ' वृद्धि स्वर वर्ण के अस्तित्व भोजपुरी में नइखे।

ए, ऐ, ओ, औ चारो संयुक्त स्वर सन्ध्यक्षर हवे स जवना के उत्पत्ति दू स्वरन के संयोग से भइल बा। वैदिक काल में ए, ऐ, ओ, औ के उच्चारण अइ, आइ, अउ अउर आउ के समान रहे। डॉ॰ शुकदेव सिंह

के अनुसार संस्कृत काल में 'ए' अउर 'औ' दूगो के अस्तित्व रह गइल जवना के उच्चारण 'अइ' अउर 'अउ' हो गइल। पालि, प्राकृत आ अपभ्रंश काल में एह 'ऐ' आ 'औ' के अस्तित्व लगभग समाप्त हो गइल रहे। 'भोजपुरी में 'ऐ' के उच्चारण 'अएँ' आ 'अइ' अउर 'औ' के उच्चारण 'अउ' आ 'अव' हो गइल बा, जइसे-मैल-मइल, जैसे- जइसे, कैसे-कइसे, भैया-भइया, कैलाश-कएलास, मैदा-मएँदा, बैल-बएल, कौआ-कउआ, दौड़-दउर, कौन-कवन, जौन-जवन वगैरह। भोजपुरी में 'औ' के उच्चारण तीन स्वर के मेल 'अउअ' के रूप में भी बा, जइसे- मौत-मउअत वगैरह।

एह तरह से भोजपुरी में एह 'ऐ' अउर 'औ' स्वर के लिपि-चिह्न अनावश्यक बा काहेकि एह के उच्चारण में दू स्वरन के अलग-अलग अस्तित्व सुरक्षित बा। ओइसे हिन्दी के प्रभाव के कारण आधुनिक भोजपुरी में 'ऐ' अउर 'औ' लिपि चिह्न के प्रयोग हो रहल बा।

अनुनासिक स्वर

अँ, आँ, इं, ईं, उं, एं, ओं

भोजपुरी में अएँ (ए) के छोड़ के बाकी स्वर के अनुनासिको रूप पावल जाला। इनकर उच्चारण स्थान उहे रहेला बाकी कोमल तालु आ काकल कुछ नीचे झुक जालें। ई अनुनासिक स्वर अर्थ भेदक हवेस। मतलब अनुनासिक स्वर से अर्थ में बदलाव आ जाला, जइसे-तागा (डोरा)-ताँगा (घोड़ा गाड़ी), विधना(विधाता)-विंधना (छेदल), खाटी-(चारपाई), खाँटी-(खरा), गाज-(फेन), गाँज-(ढेर), पूछ-(पूछल

क्रिया), पूँछ (जानवर के पोंछ), गोड़-(पैर), गोंड़-(एगो खास जाति), भाग-(हिस्सा) भाँग-(नशा के वस्तु) वगैरह।

व्यंजन के उच्चारण संबंधी विशेषता

क् से ह् तक भोजपुरी में बत्तीस गो मूलं व्यंजन ध्वनि बा जवना के उच्चारण स्वर के सहायता से होला। एह में टवर्गी 'ण्' आ ऊष्म 'श्' अउर 'ष्' के अस्तित्व नइखे। ण्, श, के स्थान पर न् आ स् व्यंजन के उच्चारण होला आ 'ष' के स्थान पर प्रायः 'ख' के उच्चारण होला। एकरा अलावे भोजपुरी में प्रायः 'ल' के स्थान पर 'र' व्यंजन के उच्चारण पावल जाला। जवना वजह से भाषाविद लोग भोजपुरी में 'न् स् र' ध्वनि केन्द्र के भाषा मनले बा। जइसे-कान (कर्ण), सोना (स्वर्ण), सांत (शांत), गनेस (गणेश), बाम्हन (ब्राह्मण), केरा (केला), नरियर (नारियल), कपार (कपाल), अंगुरी (अंगुली), गारी (गाली), पीतर (पीतल), धूर (धूल), मछरी (मछली), पुतरी (पुतली) वगैरह। अइसे मागधी सहित हिन्दी आदि अन्य आधुनिक भारतीय आर्यभाषा के प्रभाव से आधुनिक भोजपुरी में ण्, श्, ष् आ ल् व्यंजन के प्रयोग खूब हो रहल बा।

क्ष,त्र,ज्ञ

प्राचीन भोजपुरी में क्ष्, त्र्, ज्ञ् व्यंजन के लिपि-चिह्न आ ओकर उच्चारण अस्तित्व नइखे। संस्कृत, हिन्दी वगैरह भाषा के प्रभाव से आधुनिक भोजपुरी के तत्सम, तद्भव शब्दन में एह ध्वनि चिह्न के प्रयोग हो रहल बा। अइसे एह तीनो मूल संयुक्त व्यंजन के उच्चारण में ध्वनि परिवर्तन के साथ कहीं-कहीं एक आ कहीं-कहीं दू गो स्वतंत्र व्यंजनन के

अस्तित्व पावल जाला आ ओकर उच्चारण स्थान ओह स्वतंत्र व्यंजनन के उच्चारण स्थान होला जइसे:-**'क्ष'**-परीक्षा-परीच्छा, शिक्षा-सिच्छा, सीख, क्षत्र-छतर, कक्षा-कच्छा, साक्ष्य-साख, पक्ष-पख, नक्षत्र-नछत्तर, भिक्षा-भिच्छा, भीख, वगैरह। **'त्र'**-पत्र-पतर, क्षत्र-छतर, पुत्र-पुतर, इत्र-इतर, पवित्र-पवितर, विचित्र-विचितर वगैरह। **'ज्ञ'**-संज्ञा-संग्या, विज्ञान-बिग्यान, ज्ञान-ग्यान, ज्ञानी-ग्यानी वगैरह।

अइसे संस्कृत-हिन्दी वगैरह भाषा के प्रभाव से आधुनिक भोजपुरी के तत्सम आ तद्भव शब्दन में क्ष,त्र, ज्ञ के प्रयोग कइल जा रहल बा। ऱ्ह, ल्ह, न्ह, म्ह वगैरह संयुक्त व्यंजन सहित क्क, म्म, ल्ल, प्प वगैरह द्वित्व चाहे युग्मक व्यंजन उच्चारण भोजपुरी ध्वनि प्रकृति के आपन विशेषता ह।

बोध प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. **'उ' कवन वर्ण ह।**

   (क) व्यंजन वर्ण (ख) स्पर्श व्यंजन वर्ण

   (ग) दीर्घ स्वर वर्ण (घ) ह्रस्व स्वर वर्ण

2. **भोजपुरी में मूल व्यंजन वर्ण के संख्या केतना बा।**

   (क) बतीस (ख) चउसठ

   (ग) पचास (घ) पचीस

3. कवर्ग के उच्चारण स्थान ह।

(क) दाँत (ख) कंठ

(ग) ओठ (घ) तालु

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'ध्वनि' का ह। एकर कए गो भेद होला।
2. वर्ण के परिभाषा देत ओकरा भेदन के बारे में बताईं।
3. स्वर वर्ण चाहे व्यंजन वर्ण के परिभाषित करत उनका भेदन के उदाहरण सहित परिचय दीं।

दीर्घ उत्तरीय

1. वर्ण के परिभाषा देत भेजपुरी के स्वर आ व्यंजन वर्ण के बारे में बताईं।
2. भोजपुरी वर्ण सब के उच्चारण स्थान के बारे में फरिआ के लिखीं।